मंडल

मंडलजी मकराने की या लकड़ी की चौकोर टेबल पर बनाए जाते हैं चारों तरफ अष्टमंगल द्रव्य व अष्ट प्रतिहार्य सजाए जाते हैं। ये चाँदी, पीतल, स्टील आदि धातु के बने हुए होते हैं। श्री जी को गंधकुटी पर मंडल से अलग टेबल पर विराजमान करके छत्र, चंवर आदि लगाकर सजावट की जाती है, पूजन उत्तर या पूर्व दिशा में मुँह कर के करनी चाहिए।

तरु अशोक के निकट में, सिंहासन छविदार।
तीन छत्र सिरपर लसै, भामण्डल पिछवार॥
दिव्यध्वनि मुखतैं खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढोरैं चौसठि चमर चख, बाजैं दुंदुभि जोय॥

अष्ट मंगल द्रव्य

झारी

बीजना (पंखा)

कलश

दर्पण

चंवर

स्वस्तिक या साथिया

ध्वजा

छत्र

अष्ट प्रातिहार्य

सिंहासन

दिव्य ध्वनि

चंवर

भामंडल या प्रभा मंडल

सुरपुष्प वृष्टि

देवदुन्दुभी

अशोक वृक्ष

छत्र त्रय